ख़ानाबदोशों की दुनिया

A World of Migrants

रेडियो प्रोग्राम 1: The right to migrate

The program will contrast how international migration is seen as desirable and internal migration is seen as problematic by the city dweller. The program will put aspiration in context by juxtaposing the animated preparations before travel that migrants from both classes (lower and upper) undertake. The focus will be on similarities to evoke empathy.

पार्श्व स्वर

मैं हूँ महक और प्रोग्राम है ख़ानाबदोशों की दुनिया। किसी नई, अनजान जगह जाने का कितना उत्साह होता है ना? मुझे बचपन से शौक था कि मैं एक बार भारत से बाहर जाके रहूँ। लेकिन मेरा सपना तो वो पूरा नहीं हो पाया, पर अर्शिया का पूरा होने वाला है। अर्शिया की एक सुमन आंटी भी हैं जिनका सपना था कि उनका भाई पढ़ लिख कर किसी बड़े शहर मैं एक अच्छी सी नौकरी करे और फिर वो उसे मिलने जाये। मैं बोलना भूल गई, सुमन आंटी अर्शिया के घर पर काम करती हैं, पर क्या इससे इन दोनों के सपने अलग हो जाते हैं?

नाटक

(रसोई में खाना बनाने की आवाज़)

अर्शिया: माँ, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में मेरा दाखिला हो गया! बस अभी अभी पुष्टीकरण मिला है।

सरिता: हाँ? बहुत अच्छा। कब से शुरू करना है? और फ़ीस कितनी है बेटा?

अर्शिया: अभी समय है माँ। मुझे आशा है कि वीसा जल्दी से मिल जाये। फिर होस्टल भी देखूंगी, एक तो सब कुछ इतना महंगा है वहाँ... पार्ट-टाइम काम का भी पता करना पड़ेगा

सरिता: काम?

सुमन: (झाड़ू लगाने की आवाज़) भाभी, थोड़ा पैर ऊपर...

सरिता: हम्म

सुमन: दीदी तुम्हारी नौकरी लग गयी, क्या?

अर्शिया: नहीं सुमन आंटी, दाखिला हुआ है।

सरिता: (गर्व से) अरे सुमन, अर्शिया अब विदेश जाएगी पढ़ने... अच्छा सुन, अपने भाई को भेज देना... आज या कल| बड़े वाले सूटकेस उतारने थे, लगे हाथ स्टोर की सफाई भी हो जाएगी।

सुमन: जी भाभी। जिस दिन कॉलेज से छुट्टी होगी, उस दिन ले आऊंगी साथ।

अर्शिया: सुमन आंटी आपके भाई का कॉलेज में दाखिला हो गया?

सुमन: हाँ हो गया दीदी, बस अब कहीं उसे काम मिल जाए। दीदी, आपके जान-पहचान में किसी नौकरी का पता होगा उसके लिए?

सरिता: (बात को बीच में काटते हुए) अरे उससे क्या बोल रही है? मैं इनसे बोल दूंगी।

सुमन: अच्छा जा रही हूँ।

अर्शिया: माँ, आप पापा को बोलोगी भी इनकी नौकरी के लिए?

सरिता: देखूंगी। नौकरियाँ पेड़ पे लगती हैं क्या? इसका तो रोना ही नहीं खत्म होता। पहले से आठ लोग रह रहे है एक कमरे में, अब इसका भाई भी आएगा। जबकि हमसे बड़े घर हैं इसके गाँव में। पर नहीं सब यहीं रहेंगे। पता नहीं क्यों आ जाते हैं यहाँ। वैसे बेटा, तुम लंडन वाली मौसी के यहाँ ही रहना, और वही काम भी ढूंढ लेना। ठीक है, बेटा?

अर्शिया: ठीक है माँ।

पार्श्व स्वर

संविधान के अनुच्छेद 19 के अनुसार, हर भारतीय नागरिक भारत में बिना किसी रोक-टोक या पाबंदी के कहीं भी अपना घर बसा सकता है। ये उसका अधिकार है। और जनगणना 2011 के मुताबिक, 45 करोड़ यानी कि लगभग 37 प्रतिशत लोग भारत में प्रवासी हैं। तो फिर कुछ लोगों के सपने जायज़ और कुछ के नाजायज़, ऐसा क्यों?

कौन होते है ये प्रवासी? क्यों शौक होता है इन्हें शहर आने का?

आम लोगों के विचार/साक्षात्कार

पार्श्व स्वर

किसी नयी जगह में रास्ता भटक जाओ तो कुछ पल के लिए अजीब सा डर लगता है, नहीं? और फिर कोई एक सज्जन टकराता है, जो सही रास्ता बता देता है, बहुत मदद करता है, और फिर सारा सफर आसान लगने लगता है। तो क्यों न अगली बार आप किसी रिक्शे वाले भैया या काम वाली आंटी के लिए वो सज्जन बन जाएँ?

रेडियो प्रोग्राम 2: The migrant as an entrepreneur

The lived experiences of migrants and their contributions to the place/city they migrate to: The ways in which they create opportunities and identities for themselves; the ways in which they create housing and water facilities for themselves.

पार्श्व स्वर

आज मैने धोबी, अखबार वाला, दूध वाला, बाई की तनख़्वाह, महीने के सारे भुगतान कर दिये हैं। मेरा बटुआ एकदम हल्का हो गया है। मैं हूँ मेहक, और प्रोग्राम है ख़ानाबदोशों की दुनिया। खर्चों का वैसे तो कोई अंत ही नही होता है। पर अगर सोचा जाए तो हमारे इन्ही खर्चों से दर असल किसी का घर भी तो चल रहा है ना? या यूँ कहें कि किसी की ज़िंदगी भी तो चल रही है, है ना?

नाटक

महिला: भैया, 250 ग्राम मूंगफली कितने की है?

मूंगफली वाला: 20 रूपए की है।

महिला: हाँ, देना।

मूंगफली वाला: आप शायद नयी हैं यहाँ।

महिला: तुम्हे कैसे पता मैं इसी कॉलोनी की हूँ? तुम लोगों की कुछ ज़्यादा ही खबर रखते हो। तुम्हे पता होना चाहिए यहाँ के निवासी कल्याण संघ ने सभी आने जाने वालो का पंजीकरण कराया है। तुम्हारा पंजीकरण कहाँ है?

मूंगफली वाला: अरे बिटिया नाराज ना हो। हम दस साल से यहाँ रहते है। हम भी इसी कॉलोनी के हैं। वो देखो, सामने गली मैं जो इस्त्री करने वाली बैठी है, वो मेरी घरवाली है।

महिला: वो उस हरे बंगले की दीवार के आगे? जो प्रेस करती है, वहां? वो तो तिवारी अंकल का घर है।

मूंगफली वाला: तिवारी जी बड़े सज्जन आदमी हैं, अपने घर के नीचे का कमरा दिया हुआ है। हम वही रहते हैं। किराये देने की जगह हम उनके फ्री मैं कपड़े प्रेस करते हैं, और मेरी दोनों बेटिया उनके घर में खाना भी पकाती हैं। तो बस भगवान की बड़ी कृपा

महिला: फिर तो तुम्हे सभी जानते होंगे यहाँ।

मूंगफली वाला: हाँ, कुछ दिनों पहले यहाँ नुक्कड़ पर दो लड़के कॉलोनी की एक लड़की को छेड़ रहे थे, तो हमने खींच के चप्पल दे मारी। उस दिन से आज का दिन, कभी नहीं दिखे दोनों।

(तराजू की आवाज, मूंगफली को लिफाफे में डालते हुए)

मूंगफली वाला: ये लो बिटिया, तुम्हारी मूंगफली

महिला: अरे सॉरी, मैं आप पर यूं ही चिल्ला दी। आप ही के यहाँ मैं अपने और अपने पति के कपडे इस्त्री करने देती हूँ। सॉरी हाँ।

मूंगफली वाला: (हंसते हुए कहते हैं) अरे, कोई बात नही, कोई नही।

पार्श्व स्वर

इस मूंगफली वाले भैया की तरह, कितने ही ऐसे प्रवासी हैं जो शहर में अपनी पहचान किसी ना किसी तरह बनाने में लगे हुए हैं।

आम लोगों के विचार/साक्षात्कार

दर्जी, फ़र्रूख़ाबाद – साक्षात्कार

ऑटो रिक्शा, जिला बलिया - साक्षात्कार

पार्श्व स्वर

भारत मैं नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस के अनुसार क़रीब 60% प्रवासी पुरुष, और 40% प्रवासी महिलाए बेहतर विकल्पों की लिए गाँव से शहर की ओर आती है।[1] बिलकुल वैसे ही, जैसे मेरे पापा भी 15 साल पहले शहर आये थे। अब चाहे मैं ऑफिस में बैठके लैपटॉप पे काम करू, या रिक्शे वाले भैया रिक्शा चलाये, हम दोनों ही मेहनत करके पैसे कमा रहे है, और अपना नाम बनाने की कोशिश कर रहे हैं। फिर नज़रिए में इतना फ़र्क क्यों? थोड़ा सोचिए, और अपने रोज़मर्रा का व्यव्हार बदलिए।

[1] UNESCO. 2012. *National Workshop on Internal Migration and Human Development in India: Workshop Compendium, Vol 2*. New Delhi, UNESCO.

रेडियो प्रोग्राम 3: A Life Without Migrants

Using satire and irony to draw out number of everyday tasks that city dwellers take for granted that will come to a halt in the absence of the migrant community that is willing to take on the dangerous and difficult jobs.

पार्श्व स्वर

मैं हूँ महक, और प्रोग्राम है ख़ानाबदोशों की दुनिया। किसी चीज़ या इंसान का महत्त्व तब ही समझ आता है जब वो हमारे पास नही होता। जरा सोच के बताइये कि ज़िंदगी आराम से चलाने के लिए आपको किन लोगो की ज़रुरत है। मम्मी, पापा, भाई, बहन, दोस्त? बस यही लोग चाहिए? किसी को भूल तो नहीं गए?

नाटक

(झुंझलाते हुए)

अनिल: मेरी शर्ट प्रेस नही है। ऑफिस के लिए लेट हो रहा हूँ, चाय भी नहीं मिली अभी तक। अरे रेनू, गीता छुट्टी पर है क्या आज?

रेनू: छुट्टी पे नहीं, वो काम छोड़ कर गाँव चली गयी है। इसलिए पूरा घर उथल-पुथल हो गया है।

अनिल: (चिलाते हुए) क्या? हे भगवान, अब तुम्हे किसी नई बाई को ढूंढना पड़ेगा, और उसमें तो काफ़ी वक़्त लगेगा। क्या झंझट है ये?

पार्श्व स्वर

देखा आपने? वो गीता ही है, जिसके ना होने से इनके परिवार का चक्का जाम हो गया है।

नाटक – दृश्य 2

आदमी: हे भगवान!

महिला: आज फिर लेट?

आदमी: अरे यार ऑटो स्ट्राइक है ना आज। रामू भी नहीं आया।

महिला: अब ये रामू कौन है?

आदमी: अरे मेरा ऑटो ड्राइवर। उसे लगा रखा है ना मुझे रोजाना ऑफिस छोड़ने के लिए। तीन बस बदल के आया हूँ। इतनी भीड़ थी कि लटक के आना पड़ा।

महिला: पर स्ट्राइक तो दो-तीन दिन और चलेगी।

आदमी: फिर हो गया काम। लगता है तब तक ऑफिस में ही रहना पढ़ेगा।

[हंसना]

पार्श्व स्वर

गीता और रामू को देख कर ऐसा लगता है कि किसी की कद्र करने के लिए जरूरी नहीं है कि उसे आपसे दूर जाना पड़े। अगर कोई आपके साथ है तो उसकी कद्र करिये। गीता और रामू जैसे लोग छोटे क़स्बों और गाँव से बड़े शहर की ओर काम करने आते हैं और हमारी ज़िंदगी का ऐसे हिस्सा बनते हैं कि उनके बिना रोज़मर्रा के काम भी कितने मुश्किल लगते हैं, है ना?

आम लोगों के विचार/साक्षात्कार

पहली औरत: मेरी नौकरानी मेरे लिए बहुत ज़रूरी है...

आदमी: प्रवासी शहरों में श्रमिकों की कमी को पूरा करते हैं...

दूसरी औरत: अगर प्रवासी ना हो तो सबकी ज़िंदगी पर बहुत असर पड़ेगा...

लड़का: उनके बिना हमारी ज़िंदगी मुश्किल हो सकती है...

पार्श्व स्वर

2008 के आर्थिक सर्वेक्षण के मुताबिक, भारत में जितने भी लोग काम करते हैं, उनमें से 93% ऐसे हैं जो असंगठित क्षेत्र में हैं, जिनमें हैं हमारी बाई, इलेक्ट्रीशियन, प्लम्बर, फैक्टरी में काम करने वाले लोग, घर से व्यवसाय करने वाली महिलाए, इत्यादि।

गाँव देहात से आये हुए प्रवासी उन कामों तक के लिए तैयार हो जाते हैं, जिन कामों को कोई शहर में रहने वाला करना पसंद नहीं करता। अगर अपने हालात से समझौता करके हमारा जीवन आसान करना इनकी मजबूरी है, तो फिर क्या छुट्टी करने पर बाई की एक दिन की तनख्वाह काटना जायज़ है? क्या खतरनाक काम करने वाले कर्मचारी से 10-50 की बहस जायज़ है? क्या ये उनका अधिकार नहीं? सोच के देखिये।

रेडियो प्रोग्राम 4: Disrupting the Homogenous Image

The child and his school; the woman and domestic work; the man in the factory/rickshaw (very short positive narratives)

पार्श्व स्वर

मैं हूँ महक, और आप सुन रहे हैं ख़ानाबदोशों की दुनिया। हमारा दिमाग इतना रचनात्मक होता है कि हम बस एक शब्द सुनते हैं, और उस से जुडी पूरी तस्वीर दिमाग में बना लेते हैं। जैसे अमिताभ बच्चन का नाम लूँ तो... दीवार... नाराज़ युवक... है ना?

लेकिन अगर मैं ऑटो वाले भैया का नाम लूँ तो आपके दिमाग में क्या आता है? ख़ैर... क्या आपने सोचा है कि ऑटो वाले भैया छुट्टी का दिन अपने परिवार के साथ कैसे मनाते होंगे?

नाटक

ऑटो ड्राइवर: रिंकू... मीनू... देखो बच्चों मैं आ गया

रिंकू और मीनू: पापा! पापा!

ऑटो ड्राइवर: ये देखो... मैं तुम दोनों के लिए नारंगी लाया हूँ। ये लो।

मीनू: पापा... कल स्कूल में रंग मंगाए हैं। अध्यापिका हमें पेंटिंग सिखायगी।

रिंकू: और पापा मुझे सफ़ेद जूते चाहिए। स्कूल मैं रेस प्रतियोगिता होने वाली है ना।

ऑटो ड्राइवर: हाँ हाँ... मैं देखता हूँ... सब हो जायगा।

महिला: (गुस्से में) पापा को बैठने तो दो... आते ही यह चाहिए वह चाहिए... जाओ बहार जाके खेलो।

ऑटो ड्राइवर: अरे कमला काहे डांटती हो बच्चों को?

महिला: बच्चों की हर चीज़ पर कह रहे हो कि आ जायेगा। कैसे आयगा? कल मकान का किराया भी देना है... गैस भी खत्म होने वाली है, वो भी तो आनी है... स्कूल की फ़ीस भी भरनी है... खेल और पेंटिंग जैसे बक़वास खर्चे सब माना करने होंगे। कैसे करेंगे ये सब?

ऑटो ड्राइवर: हाँ, मुश्किल तो है। सोच रहा हूँ इस ररिवार को छुट्टी ना करू, ऑटो निकाल ही लूं। थोड़ा उधार उठा लूंगा। मेरे बच्चे बड़े होकर कुछ अच्छा काम करेंगे, इसके लिए आज जो हम करेंगे कल वही तो रंग लाएगा ना। तू चिंता मत कर। यह बता आज खाने में क्या बनाया है?

महिला: आज दाल बनाई है, लहसुन और जीरे का छोंक भी लगाया है।

ऑटो ड्राइवर: अरे वाह। दिल खुश कर दिया। ले आ ले आ, जल्दी ले आ। बहुत भूख लगी है।

पार्श्व स्वर

हम को तो यही लगता है ना कि ऑटोवाले का बेटा ऑटोवाला ही बनेगा, काम वाली बाई की बेटी काम वाली बाई बनेगी। यूनेस्को की एक रिपोर्ट का यह अंदाज़ा है कि भारत में क़रीब 1.5 करोड़ बच्चे प्रवासी हैं।[2] तो इन 1.5 करोड़ बच्चों के भी कुछ सपने होंगे ना?

आम लोगों के विचार/साक्षात्कार

लड़की: मैं डॉक्टर बनना चाहती हूँ...

औरत: मैं अपनी बेटी को काम पर ले जा सकती हूँ, और मुझे ज़्यादा पैसे भी मिलेंगे, लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहती...

लड़का: मैं बड़ा होकर पुलिस अफसर बनाना चाहता हूँ...

आदमी: मेरा बेटा कॉलेज में है, और बेटी स्कूल में है। मैं नहीं चाहता वह बड़े होकर मेरे जैसे बने...

पार्श्व स्वर

गाँव से लोग शहर आते हैं एक बेहतर भविष्य के लिए। लेकिन प्रवासियों को आम शहरियों के मुक़ाबले में नौकरी ढूंढने में ज़्यादा परेशानी होती है। वो इसलिए क्योंकि उनके लिए सुविधाएं नहीं होती हैं। और इसी वजह से इनका शोषण भी होने लगता है, और इसी वजह से इनको इनके अधिकार नहीं मिल पाते।

यूनेस्को दिल्ली की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय घरेलु प्रेषण बाज़ार का मूल्य तक़रीबन 1000 करोड़ डॉलर है।[3] तो हम सबकी तरह देश के विकास में प्रवासियों का भी योगदान है। तो अगली बार ऑटो वाले भैया से 10-20 रूपए के लिए चिक चिक मत करियेगा, क्योंकि हो सकता है कि दस रूपए ज़्यादा मिलने से वह अपने बेटे के लिए नए जूते ले आये। सोचियेगा ज़रूर।

[2] UNESCO. 2013. *Social Inclusion of Internal Migrants in India*. New Delhi, UNESCO.

[3] Ibid.

रेडियो प्रोग्राम 5: Belongings and Un-belongings

How migrants' identity depends on cultural, social and other cooperation and dynamics in the city and the amount of othering they face. The city dweller is a part of this project.

पार्श्व स्वर

मैं हूँ महक, और शो का नाम है ख़ानाबदोशों की दुनिया। पता है मैं अभी सोच रही थी कि क्या हमारा शहर कभी एकदम किसी फॉरेन शहर जैसा लग पायेगा? मतलब जहाँ एकदम सफाई हो... पर क्या ऐसा वाकई किया जा सकता है? हम्म?

नाटक

(खाने की दुकान)

अरुण: सरकार का नया आर्डर आया है...

आशीष: अब क्या हो गया?

अरुण: वो अपनी कॉलोनी के बगल वाली बस्ती है ना, उसे हमेशा के लिए हटा देंगे।

[राहत की सांस]

अच्छा हुआ, आसपास का माहौल खराब करके रखा था।

आशीष: गन्दगी तो थी, पर वहां इतने सारे लोग रहते हैं यार। मेरी बाई भी वहीं से आती है।

अरुण: मुआवजा भी तो देगी सरकार। बना लेंगे दोबारा घर, उसमें क्या है?

आशीष: फिर बढ़िया है यार, कुछ सोच समझ के ही सरकार ने फैसला लिया होगा।

आम लोगों के विचार/साक्षात्कार [नागर-वासी]

औरत: झुग्गी-झोपडी में भी इंसान रहते है...

पहला आदमी: सरकार झुग्गी-झोपडी नहीं हटाएगी क्योंकि वह उनके वोट बैंक हैं...

दूसरा आदमी: वहाँ रहन-सहन की सुविधा कम होती है...

पार्श्व स्वर

आप शायद जानते नहीं, है पर 2011 के जनगणना के अनुसार, शहरों की बस्तियों में लगभग 1.3 करोड़ घर-गृहस्तियां होती हैं। गाँव में रोज़गार की कमी होने के कारण लोग शहर आते है नौकरी ढूंढने, और इसी के चलते यहाँ पे बस्तियां बढ़ती चली जाती है।

मगर इससे भी जरूरी है यह जानना कि भारत का संविधान हमें प्रवास करने का अधिकार देता है। और हमें यह हक है कि हम देश में कहीं भी जाकर रह सके। लेकिन घर, साफ सफाई, और बुनियादी ज़रूरतें पूरा करने की कोई योजना ना हो, तो इस अधिकार का कोई मतलब भी है क्या?

तो जरूरी है कि प्रवासियों के लिए व्यवस्था बनाई जाये। ना कि उनकी बस्तियां हटाई जाये।

रेडियो प्रोग्राम 6: The Working Woman

Creating an equity of inequities. A portrait of two migrant working women from two different classes struggling for childcare

पार्श्व स्वर

ओ बाबा! सर दर्द कर रहा है मेरा। सुबह सुबह चिक चिक शुरू हो जाती है हमारी पड़ोसन की। ऊपर ही रहती हैं, मीना आंटी। रोजाना ही नौकरानी पर चिलाती हैं। इनका रोज़ का नाटक है ये। खैर छोड़िए।

मैं हूँ महक, और प्रोग्राम है ख़ानाबदोशों की दुनिया। वास्तव में इनकी नौकरानी अपने दो साल के बच्चे को किसी के पास छोड़ के आती है। कभी लेट भी हो जाती है, जो आंटी को बर्दाश्त नहीं होता।

आप जानते हो? जो औरतें प्राइवेट सेक्टर वगैरा में काम करती हैं, उनके लिए कितनी सुविधाए होती हैं, जैसे कि दिन देखभाल, शिशु गृह, यहाँ तक कि उनके पास नौकरनीं भी होती हैं। अब जैसे मैं हाल ही में अपनी दोस्त नताशा से मिली, जो विज्ञापन एजेंसी में काम करती है। उसके दो बच्चे भी हैं, जिनको वो नौकरानी के पास छोड़ के अपने दफ्तर जाती है। आईये सुनते हैं कि नताशा ने क्या कहा।

एक शहरी महिला से साक्षात्कार

पार्श्व स्वर

एक छोटे बच्चे और उसकी माँ, दोनों को ही देखभाल की ज़रुरत होती है। इसलिए आज-कल ज़्यादातर दफ्तरों में दिन देखभाल, और बच्चे की देखभाल करने के लिए सवेतनिक प्रसूति-छुट्टी की सुविधा भी दी जाती है। और यह औरतों का हक़ भी है।

तो क्या प्रवासी महिलाओं का भी इन्ही अधिकारों पर हक़ नहीं बनता?

नाटक

पूजा: माँ मैं सिर्फ दीपू को संभालती रहती हूँ। इसे अपने साथ काम पे ले जाया कर, और मुझे नहीं पता पर मेरा स्कूल में दाखिला करा।

माँ: बावली हो गई है क्या? इतनी सी तनख्वा में घर तो ठीक से चलता नहीं, तेरी स्कूल की फीस कैसे दूँगी?

पूजा: पर माँ!

माँ: मेरी समझदार बेटी है ना? बस दो-तीन घर और लगा लूँ, तब पढ़ लेना। ठीक है?

पूजा: हाँ, ये तू छह महीने से बोल रही है।

गीता: देख बेटा, जब हम गाँव से आये थे तो तेरे बापू काम पे जाते थे। मैं दीपू को देखती थी, तब तू स्कूल भी जाती थी। अब तेरे पास छोड़के ना जाउंगी दीपू को तो क्या करुँगी? और इसे साथ ले तो जाऊँ, लेकिन फिर साहब मेमसाब खुनसाने लगते हैं। मुझे वो भी अच्छा नहीं लगता।

तू घर पे पढ़ाई किया कर ना, जल्दी स्कूल में भी नाम लिखवा दूंगी...

पार्श्व स्वर

इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज ट्रस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार 41% महिला प्रवासी खासतौर से घरेलु काम की ही खोज में शहर आती हैं।[4] गाँव में काम कम होता है, तो शहर आकर यह औरतें घरों में काम करतीं हैं। ऐसे में यह अपने बच्चो की देखभाल कैसे कर पाती हैं?

प्रवासी कामवाली बाई से साक्षात्कार

पार्श्व स्वर

ये तो रही बात घरों में काम करने वाली बाई की, लेकिन उन औरतों का क्या जो निर्माण स्थलों पर काम करती हैं? वहाँ तो टॉयलेट जाने तक की कोई सुविधा नहीं होती। फिर सोचो वो औरतें गर्भावस्था में क्या करती होंगी? अपने छोटे-छोटे दूध पीते बच्चों को कहाँ निर्माण स्थलों पर रख के मजदूरी करती होंगी? सोच कर हमदर्दी होती है ना? लेकिन सिर्फ सहानुभूति से काम नहीं चलेगा। शुरुआत अपनी बाई से कीजिए। बात बात पर पैसे काटने की धमकी देना बंद करें, और सोचिये कि अगर आपके बच्चों को वह संभल रही है, तो उनके लिए वहाँ कौन होगा?

[4] S. Bhattacharya. 2009. *Report on Urban Poor Livelihoods: Domestic Workers in Delhi*. New Delhi, Institute of Social Sciences Trust.

रेडियो प्रोग्राम 7: Agencies and Choices

Narratives of the brave choices that migrants make when deciding to leave adversity and how they bring change in their source areas.

पार्श्व स्वर

मैं हूँ महक, और प्रोग्राम है ख़ानाबदोशों की दुनिया। मेरा कहीं घूमने जाने का बड़ा मान हो रहा है। लेकिन परेशानी यह हैं कि मैं मुम्बई के अलावा किसी और शहर में किसी को नहीं जानती। मैं डरपोक नहीं हूँ, लेकिन हाँ सुकून रहता है कि नए शहर में कुछ उल्टा पुल्टा हो जाए तो कोई जान पहचान का होना चाहिए... लेकिन ये भी कितना अजीब लग रहा है ना, कि मैं सिर्फ़ घूमने जा रही हूँ दूसरे शहर, फिर भी कितना सोच रही हूँ।

लेकिन अगर कोई गाँव से शहर आता होगा तो किस तरह की मालूमात करता होगा, सलाह-मशवरा किस्से करता होगा? सोचने वाली बात है ना?

नाटक

श्याम: अरे दीपक भैया, कब लौटे शहर से?

दीपक: कल रात आया हूँ। और तुम बताओ कैसी चल रही है खेती-बाड़ी?

शयम : सब ठप्प पड़ा है। इस साल इतनी बारिश हुई है कि बुरा हाल है। अब काम ढूंढ रहा हूँ। घर भी तो चलाना है।

दीपक: ओहो, काम क्या यहीं गाँव में देख रहे हो?

श्याम: नहीं भैया, दरअसल एक ठेकेदार से मिलके आया हूँ, कह रहा था दिल्ली में काम दिलाएगा।

दीपक: अरे ओ भाई... किसी भी ऐरे-गैरे की बात पर भोरोसा मत करना। मैं दिल्ली में तुम्हे अपने मालिक से रिक्शा चलाने के लिए भाड़े पर दिलवा दूंगा, फिर वहीं रह कर खुद जान-पहचान बढ़ाओगे तो और कोई नया काम भी मिल सकता है, है ना।

श्याम: पर ठेकेदार साहब बोले थे बड़ा काम है, अच्छा पैसा मिलेगा।

दीपक: वो ठेकेदार क्या तेरा दोस्त है? हैं? कल को तुझे पैसे ही ना मिलें तो? ऐसे लोग बीच में बैठ के दलाली खाते हैं।

श्याम: अरे... तो भैया, क्या आपका मालिक भरोसेमंद हैं?

दीपक: मैं उनके साथ 2 साल से काम कर रहा हूँ। बस तुझे रिक्शा का भाड़ा देना होगा हर महीने, उसके ऊपर की सारी कमाई तेरी अपनी। जितनी मेहनत तू करेगा, उतना कमायेगा।

श्याम: हम्म... बात तो सही है भैया, आप बताना कब निकलोगे शहर को? मैं अपनी तैयारी करके रखता हूँ।

दीपक: ये हुई ना बात!

पार्श्व स्वर

श्याम को तो कोई दीपक जैसा अपना मिल गया... लेकिन कुछ लोग गाँव से शहर की ओर आते हैं, लेकिन बेईमानी और धोखादड़ी के जाल मैं फँस जाते है।

ऐसा ना हो इसके लिए बहुत कम साधन हैं, जो सही जानकारी और रोज़गार की बातें प्रवासियों तक पहुँचा सके।

आम लोगों के विचार/साक्षात्कार

आदमी: ज़जियाबाद में मेरा पैसा मारा गया, और उसके बाद मैंने काम छोड़ दिया। अब मैं ऑटो चलाता हूँ...

महिला: रहने में बहुत दिक्कत होती है... पानी और बिजली की काफ़ी कमी रहती है...

पार्श्व स्वर

भारत मैं ज़्यादातर प्रवासी नौकरी ढूंढने के लिए बिचौलियों यानि ठेकेदार पर निर्भर रहते हैं। क्योंकि प्रवासियों की ज़्यादातर नौकरियाँ अनौपचारिक क्षेत्र मैं होती है, इसलिए उनका कई तरह से शोषण भी किया जाता है: जैसे ज़्यादा से ज़्यादा काम और कम तनख्वा, यौन शोषण, और कोई औपचारिक अनुबंध ना होने के कारण बहुत बार प्रवासियों को कई महीनों तक उनकी तनख्वा भी नहीं मिलती।

भारत मैं लगभग 1.5 करोड़ से 10 करोड़ तक मौसमी प्रवासियों है।[5] इनके हक़ और इनके रोजगार से मिलने वाली इनकी सभी सुविधाओं की जानकारी इन तक पुहंचनी चाहिए। और यह सारी बातें इन तक पहुँचें इस बात की जिम्मेदारी हमें लेनी चाहिए।

तो आज मेट्रो स्टेशन से निकलते समय उस बिडिंग को ऊपर से नीचे देखिएगा और सोचियेगा कि इसे बनाने में कितना सारे प्रवासियों का हाथ होगा। और उन्हें इस शहर को बेहतर बनाने का हम कितना श्रेय देतें हैं? सोच के देखिएगा।

[5] P. Deshingkar and S. Akter. 2009. *Migration and Human Development in India*. Human Development Research Paper 2009/13, UNDP.

रेडियो प्रोग्राम 8: Migration and Change

The small and incremental changes in gender norms; how the experience of travel expands narrow traditional and caste based restrictive practices.

पार्श्व स्वर

(चूड़ियों की आवाज)

नमस्ते। मैं हूँ महक, और यह है मेरी चूड़ियाँ, और प्रोग्राम चल रहा है ख़ानाबदोशों की दुनिया।

वैसे हमारी कॉलोनी के बहार एक बाज़ार लगा है जिसमें राजस्थान से कुछ औरतें चूड़ियाँ बेच रहीं थी। वहाँ एक औरत मुझसे खूब बातें भी करने लगी... उसका नाम है नूपुर। मुझे इतनी प्यारी लगी कि मैंने उससे चूड़ियाँ लेली। उसकी अभी शादी हुई है, मगर उससे बात करके मुझे लगा कि उस जैसी कितनी औरतें होंगी जो शादी करके गाँव से शहर आती होंगी। नूपुर जैसी कुछ औरतें कारोबार भी करती हैं।

नाटक

ग्राहक: आंटी, ये झुमके कितने के हैं?

ममता: 200

ग्राहक: अच्छा 150 में देदो

ममता: 200 से कम में नहीं दूंगी। लेना हो तो लो

ग्राहक: अच्छा चलो देदो

लाता: वाह ममता दीदी, घाटा नहीं होने दिया एक भी पैसे का! बहुत बढ़िया!

ममता: तू भी सीख जायगी।

लाता: पर कैसे? मुझे तो ठीक से बात करनी भी नहीं आती।

ममता: अरे दो ही दिन तो हुए हैं गाँव से आये हुए, धीरे-धीरे सब सीख जाओगी। अंग्रेजी बोलना भी!

लाता: आप कितने साल से हो यहाँ?

ममता: 10 साल। शहर गाँव से काफी अलग होता है, और महँगा भी। घर वाले की कमाई पर रहो तो एक पैसा भी ना बचे। इसलिए मैंने भी कुछ ना कुछ शुरू किया। यहाँ विदेशी भी आते है, मेरे झुमके लेने! तो सुन सुनके अंग्रेजी मैंने भी सीख ली। सिंपल!

लाता: वाह दीदी... पर मुझे बहुत घबराहट होती है।

ममता: शुरू मैं सबको होती है। तुम देखना, एक बार काम शुरू होगा तो पता भी नहीं चलेगा। और जब खुद की कमाई से घर संभालेंगी तो देखना कितना अच्छा लगेगा।

आप लोगों के विचार/साक्षात्कार

महिला एक: हम पिछले चालीस साल से काम कर रहे है। इससे गाँव की औरतें को भी ज़्यादा काम मिलने लगा...

महिला दो: गाँव की औरतें को शहरों मैं ज़्यादा सहारा नहीं मिलता...

महिला तीन: जो काम मैं यहाँ कर पाती हूँ वो काम मैं गाँव में नहीं कर सकती...

पार्श्व स्वर

जब आज़ादी से जीने लगते हैं, तो आवाज़ में भी ख़ुशी झलकने लगती है। शहर की सड़को पर औरतों का उतना ही हक़ है जितना मर्दो का। फिर चाहे वो प्रवासी महिलाएं ही क्यों ना हो। गाँव से निकल कर औरतें शहरों में बहुत कुछ नया सीखती हैं, उनकी समझ के दायरे बढ़ जाते हैं, और वह अपना एक वुजूद बना पाती हैं।

यूनेस्को की 2012 की एक रिपोर्ट के अनुसार, प्रवासी महिलाएं ज़्यादातर घर-घर जाके काम करती हैं, या ठेला लगाती हैं।[6] इस तरह के काम अनौपचारिक क्षेत्र में आते हैं, और इसी वजह से इनका शोषण भी होता है। एक आर्टिकल के अनुसार, भारत में कुल 1 करोड़ फेरीवाले हैं।[7]

अंतरराष्ट्रीय प्रवास संस्था की एक रिपोर्ट कहती है कि प्रवासी महिलाओं का दर्जा काफ़ी हद तक सुधर जाता है।[8] इसलिए, एक प्रवासी महिला के लिए शहरों को सुरक्षित जगह बनाना बहुत ज़रूरी है। और यह हमारी ज़िम्मेदारी है।

---

[6] UNESCO. 2012. *National Workshop on Internal Migration and Human Development in India: Workshop Compendium, Vol 2*. New Delhi, UNESCO.

[7] WEIGO. *Street Vendors in India*. Available at http://www.wiego.org/informal_economy_law/street-vendors-india

[8] Based on several reports of the International Organization for Migration (IOM), including B. Sijapati. 2015. *Women's Labour Migration from Asia and the Pacific: Opportunities and Challenges*. IOM-MPI Issue in Brief No. 12.

रेडियो प्रोग्राम 9: What can we do?

Creating very small and doable things city dwellers can do to contribute like don't haggle with the rickshaw puller, strike up a conversation, pay minimum wages and provide leave to the domestic help etc.

पार्श्व स्वर

मैं हूँ महक, और प्रोग्राम है ख़ानाबदोशों की दुनिया। आज ऑटो में आते हुए ऑटो वाले भैया से बातें करने लगी। बता रहे थे कि बड़ी मेहनत से उन्होंने 10,000 रूपए जमा किया थे, गाँव में अपनी माँ को भेजने के लिए। लेकिन पिछले महीने उनकी बेटी के इलाज में एक झटके में सारी जमा पूँजी निकल गई। उधर गाँव में माँ को पैसे की ज़रुरत। बेचारे बड़े परेशान थे। अब मुझे बुरा लग रहा है कि उन्हें बैंक में अकाउंट खोलने के लिए ही कह देती।

इन लोगों की ज़िंदगी कितनी मुश्किल है... अपना गाँव छोड़ के आते हैं, पर नौकरी मिलना मुश्किल, ऊपर से जितनी महंगाई है उतनी तनख्वा नहीं... क्या किया जाए... हम्म? बताइये?

नाटक

सुनीता: तो रेनू,रेनू नाम है ना?

(चूड़ियों की आवाज)

रेनू: जी

सुनीता: तो फिर कल 7 बजे आ जाना। महीने के 1000 रूपए दे दूंगी, ठीक है?

रेनू: दीदी मैं 5 बजे आ सकती हूँ?

सुनीता: 5 बजे तो मुश्किल है। नहीं यार मैं 4:30 बजे जिम जाती हूँ, हो नहीं पायेगा। पर तुम 7 बजे क्यों नहीं आ सकती? कोई ख़ास वजह?

रेनू: दीदी मैं शहर में नई हूँ। मेरे पति को मेरी चिंता रहती है। इसलिए बाहर जाकर काम नहीं करने देते। हमारे पास अभी पैसे नहीं हैं तो मेरा काम करना बहुत ज़रूरी है। इसलिए मैं 5 बजे आने के लिए बोल रही थी, क्योंकि तब वो भी काम पर रहते हैं।

सुनीता: हम्म... तो यह बात है... तो मैं जिम से 5:30 बजे वापस आने की कोशिश करती हूँ। तुम्हे 5:30 चलेगा?

रेनू: हाँ दीदी, ये ठीक है। धन्यवाद।

सुनीता: ठीक है, कल से आ जाना फिर...

पार्श्व स्वर

हमारी थोड़ी सी मदद से किसी की परेशानी दूर कर सकती है। अब देखते है आप इनकी परेशानी कितनी समझ पातें हैं।

आप लोगों के विचार/साक्षात्कार

पहला लड़का: में अपनी नौकरानी के बच्चों को मुफ्त में पढ़ाती हूँ...

दूसरा लड़का: मेरे पास ज़्यादा कुछ नहीं है, लेकिन मैं अपने परिवार द्वारा उनकी मदद करता हूँ...

आदमी: हम रोज तो मदद नहीं करते, लेकिन हम मदद करते है जब उनको ज़रुरत होती है...

महिला: में अपनी कामवाली के बच्चों को कपड़े और किताबे देकर मदद करती हूँ...

पार्श्व स्वर

एक आर्टिकल के अनुसार वो औरतें जो ठेला या थड़ी लगाती हैं, दिन में लगभग केवल 40-60 रूपए ही कमा पाती है।[9] और उनसे भी हम बार्गेन कर लेते हैं। दिहाड़ी के मजदूर की रोज की वेतन के लिए भी हम कभी-कभी बार्गेन कर लेते हैं। रिक्शा वाले, सब्ज़ी वाले, हर किसी से कम से कम दामों में काम कराने में हमें कितना अच्छा लगता है।

पर याद रखिये कि प्रवासी हमारी रोज़ की ज़िंदगी में और शहर के विकास में कितना हाथ बटाते हैं। ये हमारे गुलाम नहीं हैं। उन्हें सुनना शुरू करें। शायद उनकी कहानियां आपका नजरिया बदल दें।

[9] WEIGO. *Street Vendors in India*. Available at http://www.wiego.org/informal_economy_law/street-vendors-india

रेडियो प्रोग्राम 10: A Did You Know Quiz?

With migrants on city dwellers alike on internationally acknowledged rights of the migrant. Done in a live group quiz format with explanation of the rights.

पार्श्व स्वर

मैं हूँ महक, और प्रोग्राम है ख़ानाबदोशों की दुनिया। ये सच है कि अपने AC घरों में रहते हुए हम बहार मजदूरी करने वालो के बारे मैं ज़्यादा नहीं सोच पाते।

चलिए आज मैं कुछ सवाल करुँगी, ये जानने के लिए कि आप प्रवास और प्रवासियों के बारे में कितना जानते है।

मेरे पहला सवाल: दिल्ली में बाई को देने के लिए न्यूनतम वेतन क्या है?

आप लोगों के विचार/साक्षात्कार

पहला: 8000 रूपए हो सकता है?

दूसरा: वो उनके काम पर निर्भर करता है

तीसरा: पूरे दिन के हिसाब से 2500-3000 होगा

चौथा: एक हजार होगा

पांचवा: 50 से 70 रूपए रोज का होगा

पार्श्व स्वर

चलिए मैं बताती हूँ। डोमेस्टिक वर्कर यानी घरों में काम करने वाले लोगों के लिए सरकार ने एक योजना बनाने का प्रस्ताव रखा है। इस योजना के तहत उनको हर महीने कम से कम 9000 रूपए दिए जायेगे। इस योजना का प्रस्ताव उन डोमेस्टिक वर्कर्स के लिए है जो घरो में पूरे दिन काम करती है। इसके अलावा दूसरे लाभ जैसे सामाजिक सुरक्षा और जरुरत पढ़ने पर छुट्टियाँ भी उस योजना में शामिल हैं।

अब मेरा दूसरा सवाल है कि आपके हिसाब से प्रवासी का राष्ट्रीय GDP (सकल देशी उत्पाद) में कितना योगदान है?

आप लोगों के विचार/साक्षात्कार

पहला: पता नहीं

दूसरा: 10%

तीसरा: शायद 30-40% होगा

चौथा: 2-3%?

पार्श्व स्वर

हमें लगता है कि प्लम्बर, मैकेनिक, ईंट भट्टी में काम करने वाले, दिहाड़ी की मज़दूरी करने वाले, और ऐसे सभी काम जो लोग करते हैं वो भारत के ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट यानी GDP में कोई योगदान नहीं करते। जबकि असलियत कुछ और है। यूनेस्को दिल्ली की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत के राष्ट्रीय GDP में मौसमी प्रवासियों का योगदान 10% है।[10]

चलिए अब मैं आपसे अगला सवाल करती हूँ। वो कौनसे सेक्टर हैं जिनमें बंधुआ बाल मजदूरी कानूनी अपराध होने के बावजूद आज भी कराई जाती है?

आप लोगों के विचार/साक्षात्कार

पहला: बाल मजदूर घरों में होते है, फ़ैक्टरियों में, होटल में...

दूसरा: घर, होटल या ढाबों में

तीसरा: छोटी फ़ैक्टरियों में होते है

पार्श्व स्वर

अपने सही कहा, और आपको ताज्जुब होगा कि 2011 के जनगणना के अनुसार भारत में पिछले दस सालों में, शहरी इलाक़ो में बाल मजदूरी 50% बढ़ गई है।[11] लगभग 7% बाल मजदूरों से कूड़ा कचरा उठवाने का काम लिया जाता है, और सड़क पर रेड्ड़ी लगाने वाले 5% हैं, चमड़े की फैक्टरी में काम करने वाले बाल मजदूरो की संख्या 15% है। लेकिन 35% बाल मजदूर होटलो में काम करते है।[12]

चलिए अब में पूछती हूँ आपसे आखरी सवाल: वो कौनसा काम है जिसकी तलाश में ज़्यादातर प्रवासी शहर आते हैं?

आप लोगों के विचार/साक्षात्कार

पहला: कपड़े, जूते, अगरबत्ती इत्यादि की छोटी कंपनियों में काम करने आते है

---

[10] UNESCO. 2013. *Social Inclusion of Internal Migrants in India*. New Delhi, UNESCO.

[11] CRY. 2015. *Child Labour in India*. Available at http://www.cry.org/media-center/press-releases/child-labour-in-india-decreasing-at-a-snails-pace/

[12] CARE and CRY. 2014. *Developing a new perspective on Child Labour: Exploring the aftermath of Mumbai raids conducted from 2008 onwards*.

दूसरा: उनकी पढ़ाई पर निर्भर करता है...

तीसरा: अकुशल श्रम के लिए...

चौथा: दैनिक मजदूरी, घरों में काम करने के लिए...

पार्श्व स्वर

निर्माण स्थलों में प्रवासियों की संख्या 4 करोड़, कपड़ा यानी टेक्सटाइल उद्योगों में 1.1 करोड़, परिवहन, खनिज संबंधी उद्योग, और खेती बाड़ी यानी कि ट्रांसपोर्टेशन, माइनिंग और एग्रीकल्चर में 1 करोड़, और घरों में काम करने वाले डोमेस्टिक वर्कर की संख्या 2 करोड़ है।[13] तो ऐसे लोग जो आपकी ज़िंदगी आसान करने में लगे हुए हैं, उनको आपके साथ की जरूरत है क्योंकि बेहतर विकल्प और जीवन पर हर एक का अधिकार है। है ना?

[13] A. Borhade. 2016. Internal Labour Migration in India: Emerging Needs of Comprehensive National Migration Policy. D. K. Mishra (ed.) *Internal Migration in Contemporary India*. New Delhi, SAGE India.